Q. फ्रांस की 1848 ई० क्रांति के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालें?

Ans:- लुई फिलिप की स्वार्थी मध्यम नीति गृह नीति एवं असफल विदेश नीति ने फ्रांस में जो विरोधी राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण बना दिया था उन सभी में 1848 ई० की क्रान्ति के अंकुर दिये थे। संक्षेप में, 1848 ई० की फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:

(i) देश में समाजवाद का विकास → व्यावसायिक क्रान्ति के परिणाम फ्रांस के नए कल-कारखाने थे तथा नए कल-कारखानों के आने में समाज में पूंजीपति और मजदूर दो वर्ग बन गए। पूंजीपतियों का आर्थिक साधनों पर एकाधिकार था, अतः वे दिन-प्रतिदिन अमीर होते जा रहे थे, लेकिन मजदूर वर्ग दिन-प्रतिदिन गरीब होता जा रहा था, अतः इस समय देश में अनेक समाजवादियों का उदय हुआ। सेण्ट साइमन वह पहला व्यक्ति था जिसने समाज के बहुसंख्यक मजदूर वर्ग के लिए एक समाजवादी योजना प्रस्तुत की। उसका मानना था कि उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को क्षमतानुसार कार्य एवं सेवानुसार प्रतिफल मिले लेकिन सेण्ट साइमन एक कल्पनाशील विचारक था उसका समाजवादी सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं था। दूसरा समाजवादी लुई ब्लांक था। लुई ब्लांक ने सेण्ट साइमन के सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। लुई ब्लांक ने अपने विचारों को 'श्रम संगठन' नामक पुस्तक के माध्यम से व्यक्त किया। लुई ब्लांक की यह पुस्तक 1848 ई० की 'क्रान्ति की बाइबिल' बन गई। वास्तव में 1848 ई० की क्रान्ति में इस पुस्तक का वही महत्व था जो 1789 ई० की क्रान्ति में रूसो की पुस्तक 'सामाजिक समझौता' का था। श्रम संगठन नामक पुस्तक की मूल विचारधारा थी कि हर व्यक्ति को काम पाने का अधिकार है तथा राज्य का कर्तव्य है कि वह उसको कार्य दे।

प्रत्येक व्यक्ति को काम के आधार पर समाज में मान्यता मिलनी चाहिए। उत्पादन के साधनों पर सरकार का आधिपत्य हो, जिससे पूंजीपति वर्ग श्रमिकों की मेहनत के फल को हड़प न कर सके।

इस प्रकार लुई ब्लांक वह पहला व्यक्ति था जिसने जुलाई राजतन्त्र को उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी अपनी याचनाओं के द्वारा उसने फ्रांस के श्रमिकों के मन में ये बात बिठला दी कि वर्तमान अर्थव्यवस्था दोषपूर्ण है उसने बड़े कटु शब्दों में मध्यवर्गीय सरकार की आलोचना की लुई ब्लांक ने अपने सिद्धान्तों को अत्यन्त ही स्पष्ट एवं सरल शैली प्रस्तुत किया जिससे बहुसंख्यक मजदूरों ने उन्हें अंगीकार कर लिया।

(2) लुई फिलिप का आंशिक समर्थन → गद्दी पर बैठते समय लुई फिलिप की स्थिति अच्छी नहीं थी, देश की तत्कालीन समस्त पार्टियां उसकी विरोधी थीं ये पार्टियां निम्नलिखित थी:

(i) बूर्बो दल - यह दल बूर्बो वंश के किसी भी राजकुमार को गद्दी पर बैठना चाहता था।

(ii) रिपब्लिकन दल (गणतन्त्रवादी) - यह फ्रांस में गणतन्त्र की स्थापना करना चाहते थे इसके नेता लामार्तीन था।

(iii) बोनापार्टिस्ट दल - यह दल नेपोलियन बोनापार्ट के किसी सम्बन्धी को गद्दी पर बैठना चाहता था।

(iv) समाजवादी पार्टी - ये लोग फ्रांस के मजदूरों की सरकार स्थापित करना चाहते थे।

(v) कट्टर राजतन्त्रवादी - ये लोग चार्ल्स के पौत्र को गद्दी पर बैठाना चाहते थे।

इस प्रकार फ्रांस में कोई भी दल लुई फिलिप का समर्थन नहीं था। ये समस्त दल इसको गद्दी

से उतारने के लिए समय-समय पर विद्रोह कर रहे थे।

(3) लुई फिलिप का अस्थायी मन्त्रीमण्डल तथा प्रधानमंत्री ग्वीजो की अनुदार नीति — लुई फिलिप के प्रारम्भिक 10 वर्षों का शासन काल अस्थिर एवं अशान्ति का था। 10 वर्षों में उसने 10 मन्त्री बदले। अन्त में 1840 ई० में फिलिप ने स्वेच्छाचारिता के अवतार ग्वीजो को अपना प्रधानमन्त्री बनाया। जनता के कड़े विरोध के बावजूद भी 1848 ई० तक वह इस पद पर बना रहा। ग्वीजो को विश्वास था कि जनता को अधिकार देना शासन को खतरे में डालना है। अतः ग्वीजो ने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि यह शासन में कोई सुधार नहीं करेगा तथा विदेश नीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेगा। राजा की स्वेच्छाचारिता के समर्थन में उसने कहा था कि "राज सिंहासन कोई खाली कुर्सी नहीं है।" दूसरी ओर फ्रांस की जनता ग्वीजो को इसलिए भी नहीं चाहती थी क्योंकि वह प्रोटेस्टेण्ट था जबकि फ्रांसीसी जनता कैथोलिक थी। व्यक्तिगत जीवन प्रदूषित होते हुए भी ग्वीजो का राजनीतिक जीवन बहुत भ्रष्ट था। मन्त्रिमण्डल को यद्यपि प्रतिनिधि सदन का समर्थन प्राप्त था और सदन का चुनाव दो लाख मतदाताओं ने किया था, लेकिन जांच करने पर पता चला कि ग्वीजो ने भ्रष्ट तरीके से बहुमत को अपने पक्ष में किया था। ऐसी स्थिति का वर्णन एक स्पष्टवादी सदस्य ने इस प्रकार किया, "प्रतिनिधि सभा का एक बाजार है जहाँ प्रत्येक प्रतिनिधि किसी पद या स्थान के लिए सौदा करता है।"

अतः जनता ने ग्वीजो का घोर विरोध किया। ऐसे समय में लुई फिलिप ने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके भारी भूल की। उसने जनता के भाषण तथा

लेखन पर तथा गणतन्त्रवादी विचारधारा के समर्थन सामाचार-पत्रों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। हेजन ने इस नीति के विषय में लिखा है, "यह नकारात्मक एवं अकर्मण्य नीति अनवरत रूप से अपनायी जाती रही जिसके कारण अधिकारिक असन्तोष ठहरता गया।"

(4) मध्यम वर्ग की प्रधानता :→ सिंहासन पर बैठने के पश्चात् लुई फिलिप ने जनता को एक उदार संविधान दिया। इसके अन्तर्गत मतदान व्यापक करने का प्रयास किया, लेकिन इससे जन साधारण का भला न हो सका क्योंकि मत का आधार धन होने के कारण प्रतिनिधि सभा में सदैव मध्यमवर्ग के लोगों की ही प्रधानता रही। निम्न वर्ग के लिए प्रतिनिधि सभा में मध्यम वर्ग के लोगों की ही प्रधानता रही निम्न वर्ग के लिए प्रतिनिधि सभा में मध्यम वर्ग का बहुमत होने के कारण कानून भी मध्यम वर्ग के हित में बनते थे। लुई फिलिप ने 18 वर्ष तक इसी मध्यम वर्ग की सहायता से शासन किया, इसी से उसकी सरकार को मध्यमवर्गीय सरकार भी कहा जाता है और मताधिकार का अधिकार भी मध्यम एवं उच्च वर्ग को ही प्राप्त था। लुई की इस नीति से अन्य राजनीतिक दल उसकी हँसी उड़ाते हुए उसे 'नागरिक राजा' की पदवी से विभूषित करने लगे। अतः 1848 ई० की क्रान्ति से निम्न वर्ग लुई फिलिप को गद्दी से हटाने की सोचने लगा।

(5) लुई फिलिप की असफल विदेश नीति → लुई फिलिप असफल रहा। लुई फिलिप में वह योग्यता नहीं थी जिसके बल पर वह फ्रांसीसी जनता को एक गौरवपूर्ण विदेश नीति दे सके। वास्तव में लुई

फिलिप की विदेश नीति से फ्रांस की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति को गहरा धक्का लगा। फ्रांस में सर्वत्र उसकी विदेश नीति की आलोचना होने लगी तथा सारे राजनीतिक दल उसके कड़े विरोधी हो गए। यूरोप के लगभग प्रत्येक देश से उसके सम्बन्ध खराब ही रहे।

वास्तव में, यह फिलिप का दुर्भाग्य था कि विवेकशील होते हुए भी वह गृह तथा विदेश दोनों ही क्षेत्रों में असफल रहा। देश के भीतर अशान्ति तथा दमनचक्र आरम्भ हो गया। विदेश नीति में उसकी दुर्बलता फ्रांसीसी जनता को अच्छा न लगी। यद्यपि लुई ने धैर्य, कूटनीति तथा विवेक से काम लेकर कभी ऐसा मौका नहीं आने दिया कि फ्रांस को युद्ध के लिए तैयार होना पड़े। लुई का यह कार्य तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए देश के हित में था, किन्तु फ्रांस की जनता इससे जनता सतुष्ट नहीं थी क्योंकि इससे उसकी गौरव भावना की पूर्ति न हो सकी थी। अत: जनता की यही मनोभावना फ्रांस को एक बार पुन: क्रान्ति के कगार पर ले आयी।